स्वतंत्रता आंदोलन में शहीद भगतसिंह का योगदान

पूजा काशीनाथ मुट्ठे
पीएच. डी. (हिंदी) शोध छात्रा,
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र
E-mail- poojamutthe@gmail.com
भ्रमण ध्वनि नम्बर: 7028147012

भूमिका–

इतिहास के पन्नों को अगर पलटा जाए तो आज भी भगतसिंह का बलिदान हमारे दिल को छू लेता है । देश को आजाद करने के लिए अनेक स्वतंत्र संग्राम हुए । उसमे केवल महात्मा गांधी ही नहीं, बल्कि भगतसिंह जैसे अनेक नौजवानों ने अपना बलिदान दिया । भगतसिंह एक महान क्रांतिकारक थे । उनका विचार था कि, आत्मरक्षा के लिए अगर कोई हिंसा की जाए तो वह हिंसा नहीं होती बल्कि आत्मरक्षा होती है ।

भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को लायलपुर जिले के बंगा में हुआ था । जो अब पाकिस्तान में है । उनका पैतृक गांव खटकड़ कलाँ है । जो पंजाब राज्य, भारत में है । उनके जन्म के समय उनके पिता किशनसिंह, चाचा अजीतसिंह और स्वर्णसिंह जेल में थे । भगत सिंह पर इन सभी का गहरा प्रभाव पड़ा था । उन्होंने बचपन में ही अंग्रेजों के अत्याचार को बहुत करीब से देखा था । वे बचपन से ही अंग्रेजों से घृणा करने लगे थे । भगतसिंह के मन में क्रांति की चिंगारी तभी जल पड़ी जब उन्होंने 1919 में जालियांवाला बाग की घटना को उन्होंने बहुत करीब से देखी और वह गंभीर रूप से उस घटना से प्रभावित हुए । बचपन में वह महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने लगे, और उनके विचारों पर चलने लगे । 14 वर्ष की आयु में ही भगतसिंह ने सरकारी स्कूलों की पुस्तकें और कपड़े जला दिए । पर चौरा–चोरी की घटना के कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन पीछे ले लिया । इसका सदमा भगतसिंह पर बहुत गहरा पड़ा । उस समय भगतसिंह लाहौर के नेशनल कॉलेज में पढ़ते थे । वहां उनकी मुलाकात सुखदेव से हुई ।

भगतसिंह हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाल और आयरिश भाषा के मर्मज्ञ चिंतक और विचारक थे । भगतसिंह भारत में समाजवाद के पहले व्याख्याता है । भगतसिंह अच्छे वक्ता, पाठक और लेखक भी थे । उन्होंने 'अकाली' और 'कीर्ति' दो अखबारों का संपादन भी किया । साम्यवादी विचारों को मार्क्स, लेनिन, एंजिल्स आदि को पढ़ने के अतिरिक्त भगतसिंह ने अप्टॉन सिंक्लेयर, जैक लंडन, बर्नड शा, चार्ल्स डिकेन्स साहित्य सहित तीन सौ से अधिक महत्वपूर्ण किताबें पढ़ रखी थी । भगतसिंह का अध्ययन व्यवस्थित वैज्ञानिक और व्यवहारिक था । वह पुस्तकों के नोट्स बनाकर साथियों से विमर्श करने के बाद अंतिम राय कायम करने के पक्षधर थे । इस दौरान भगतसिंह को अधिकतर मार्क्सवाद से संबंधित पुस्तकें पढ़ने को मिली । मथुरादास ठाकुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, "भगतसिंह और सुखदेव को छोड़कर और किसी ने ना तो समाजवाद को अधिक पढ़ा है और ना ही मनन किया था । भगतसिंह और सुखदेव का ज्ञान भी हमारी तुलना में अधिक ही था ।" 1 लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़ कर भगतसिंह ने लाहौर में रहकर वे युवाओं में क्रांतिकारी विचारों को फैलाने लगे । पंजाब में 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन

एसोसिएशन' के विचारों को फैलाने के लिए उन्होंने 1926 में 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की । वे सभी समाजवादी विचारधारा से प्रभावित थे । वे युवाओं की सहायता से भारत में मजदूरों और किसानों का गणराज्य स्थापित करना चाहते थे । उनके दल के प्रमुख क्रांतिकारी– सुखदेव, यशपाल, चंद्रशेखर आजाद एवं राजगुरु थे । भगतसिंह ने सशस्त्र क्रांति को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एकमात्र हथियार माना ।

भगतसिंह ने अपने क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी के 'पत्र प्रताप' से की थी । उसमें वह बलवंत के नाम से लिखा करते थे । यह विद्यार्थी और भगतसिंह की घनिष्ठता का रहस्य बहुत बाद में उजागर हुआ । अपने प्रखर राष्ट्रवाद के कारण भगतसिंह ने अपने साथियों का विदेश जाकर आर्थिक सहायता प्राप्त करने का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया । दरअसल उन्होंने ही क्रांतिकारियों को एकजुट करने की पहली गंभीर कोशिश की थी । 1928 में 'साइमन कमीशन' का विरोध करते हुए, 'लाला लजपतराय' पुलिस की मार से शहीद हो गए । सारे देश में निराशा और बेबसी की लहर दौड़ गई । इस राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने के लिए भगतसिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को इसके दोषी अंग्रेजी अफसर 'साण्डर्स' की गोली मारकर हत्या कर दी । इनमें चंद्रशेखर आजाद ने उनकी पूरी सहायता की थी । इस कार्यवाही के बाद भी लोगों में आजादी की लड़ाई के लिए उत्साह और क्रांतिकारियों का संकल्प, विचारधारा उन तक नहीं पहुँच पाई थी । इसी कारण भगतसिंह और उनके साथियों को निराशा प्राप्त हुई । किसी व्यक्ति को मारना भगतसिंह का उद्देश्य नहीं था । वह अपने देशवासियों को अपने समाजवादी लक्ष्यों के बारे में बताना चाहते थे । अंततः भगतसिंह देशवासियों तक अपनी आवाज पहुँचाने के उद्देश्य से केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने की योजना बनाई । ताकि देश का ध्यान बहुजन क्रांति की ओर खींचा जा सके ।

हरदीपसिंह के अनुसार "8 अप्रैल 1929 को इम्पीरियल असेम्बली, दिल्ली में भगतसिंह और बी.के दत्त ने बम विस्पोर्ट करने के बाद गिरफ्तारी देते हुए 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा लगाकर अंग्रेज सरकार की जड़ें हिला दी । असेम्बली में लाल रंग के पर्चे फेंके गए जिन पर लिखा गया था 'बंद कानों को सुनने के लिए धमाके की जरूरत होती है ।"[2] भगतसिंह और उनके साथियों का बम फेंकने का मकसद किसी को मारना नहीं था । बल्कि ब्रिटिश हुकूमत द्वारा लागू किए गए दो बिलों पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेडी डिस्प्यूट बिल का विरोध करना था । वह वहां से भाग सकते थे, पर उन्होंने अपनी गिरफ्तारी स्वयं कराई । वहां से न भागने के पीछे उनका मकसद अपनी बात लोगों तक पहुंचाने की थी । उस दौर में ब्रिटिश दमन इतना तेज था कि, किसी भी इन्कलाबी किताब, विचार लोगों तक पहुंचाना लगभग नामुमकिन था । भगतसिंह और उनके साथियों ने अपनी गिरफ्तारी देने के बाद कोर्ट में अपने बयान दिए और उम्मीद की कि, इस बयान को अखबारों में छपा जाएगा और शायद इसी बहाने लोगों तक अपने विचार और सोच वे लोगों तक पहुँचा सकेंगे ।

भगतसिंह ने विचार प्रकट करते हुए कहा कि, "क्रांतिकारियों का विश्वास है कि, देश को क्रांति से ही स्वतंत्रता मिलेगी वे जिस क्रांति के लिए प्रयत्नशील है और जिस क्रांति का रूप उनके सामने स्पष्ट है उसका अर्थ केवल यह नहीं कि, विदेशी शासकों तथा उनके पिटठुओ से क्रांतिकारियों का सशस्त्र संघर्ष हो, बल्कि इस सशस्त्र संघर्ष के साथ–साथ नवीन सामाजिक व्यवस्था के द्वारा देश के लिए मुक्त हो जाए । क्रान्ति पूँजीवाद, वर्गवाद तथा कुछ लोगों को ही विशेषाधिकार दिलाने वाली प्रणाली का अन्त कर देगी । यह राष्ट्र को अपने पैरों पर खड़ा करेगी । उससे नवीन राष्ट्र और नए समाज का जन्म होगा । क्रांति से सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि वह मजदूर तथा किसानों का राज्य कायम कर उन सब को सामाजिक अवांछित तत्वों को समाप्त कर देगी जो देश की राजनीतिक शक्ति को हाथियाये बैठे हैं ।"[3] भगतसिंह का मकसद पूँजीवाद को मिटाना था । उनका सपना संपूर्ण स्वतंत्रता का था । वे चाहते थे कि, देश में कोई किसी का शोषण नहीं करेगा । सब को स्वतंत्रता से जीने का अधिकार है । जाति, प्रांत के नाम पर कोई लड़ाई नहीं करेगा । मुल्क सभी के लिए समान है । भगतसिंह इन मूल्यों के लिए लड़े और समाज को संदेश देते रहे कि "देश के

नौजवानों ने बहुत इंतजार कर लिया । बहुत दिनों तक घुट–घुट कर जी लिये । इस या उस चुनावबाज पार्टी से बदलाव की उम्मीदें पालकर बहुत धोखा खा लिया । उन्हें सोचना ही होगा कि अब और कितना छले जायेंगे? अब और कितना बर्दाश्त करेंगे? दुनियादारी के भंवरजाल में कब तक फँसे रहेंगे? कितने दिन तक चुनौतियों से आंखें चुरायेंगे? उन्हें भगतसिंह के संदेश को सुनना होगा । नई क्रांति की राह पर चलने के लिए वक्त आवाज दे रहा है, उसे सुनना होगा"[4] भगतसिंह ने अपनी वैचारिक समझदारी को समाज के सामने लाने का प्रयास किया था । उनके लिए आजादी का ध्येय था सिर्फ समाजवाद और धर्मनिरपेक्ष राज्य ।

जेल में भगत सिंह दो साल रहे। उन्होंने वहां की दयनीय स्थिति को देखकर जेल में भूख हड़ताल शुरू की । उनकी मांगे थी कि, कैदियों को खाने लायक अच्छा खाना, कपड़े और किताबों की व्यवस्था की जाए । जेल में उन्होंने अनेक अत्याचारों को सहा । उनकी भूख हड़ताल रोकने की बहुत कोशिश की गई, पर वो कामयाब नहीं हो सके । 64 दिनों तक भूख हड़ताल जारी थी जिसमें उनका एक साथी यतींद्रनाथ दास ने तो उस भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिए थे । जब भगतसिंह जेल में थे । इस दौरान वे लेख–लिखकर अपने क्रांतिकारी विचार व्यक्त करते रहे । अपने लेखों में उन्होंने कई तरह के पूंजीपतियों को अपना शत्रु बताया है । उन्होंने लिखा है कि, मजदूरों का शोषण करने वाला चाहे वह एक भारतीय ही क्यों न हो वह उनका शत्रु है । उन्होंने जेल में अंग्रेजी में एक लेख भी लिखा था । जिसका शीर्षक था 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' जेल में रहते हुए उनका अध्ययन बराबर जारी रहा । इस दौरान उनके लिखे गए लेख व परिवार को लिखे गए पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण है ।

असेंबली में धमाके के बाद जो मुकदमा चलाया गया । उस मुकदमें को भगतसिंह ने तथा उनके साथियों ने गंभीरता से नहीं लिया । उनका मकसद केवल अपने विचारों को जनता तक पहुंचाना था । अंततः इस मुकदमे का फैसला सुनाया गया । जिससे भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी तथा 9 क्रांतिकारियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई । सरकार ने 24 मार्च 1931 को तीनों क्रांतिकारियों को फाँसी देने का निर्णय लिया । सामान्यता: फाँसी प्रात:काल के समय दी जाती थी । तथा शव परिजनों को सौंप दिये जाते थे । परंतु सरकार ने जनता के भय से दोनों परंपराओं को नहीं निभाया । 23 मार्च 1931 को तीनों को सायं के सात बजे फाँसी दे दी गई । तथा गुप्त तरीके से उनके शवों को सतलज नदी के तट पर ले जाकर उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया ।

भगत सिंह भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी थे । आज भी सारा देश उनके बलिदान को बड़ी गंभीरता व सम्मान से याद करता है । उनके जीवन पर आधारित कई हिन्दी फिल्में भी बनी हैं जिनमें– द लीजेंड ऑफ भगत सिंह, शहीद, शहीद भगत सिंह आदि प्रमुख है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. हरदीप सिंह, – शहीद सुखदेव नौघरा से फाँसी तक – राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ, जनवरी – 2017, पृष्ठ क्र. 25
2. डॉ. हरदीप सिंह, – शहीद सुखदेव नौघरा से फाँसी तक – राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ, जनवरी – 2017, पृष्ठ क्र. 58
3. भगतसिंह, अंतिम पृष्ठ – बम का दर्शन और अदालत में बयान – राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ, जनवरी – 2017
4. भगतसिंह, प्रस्तावना – बम का दर्शन और अदालत में बयान – भगतसिंह, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ, जनवरी – 2017